संसदीय प्रक्रिया एवं सुशासन पर प्रशिक्षण

दिनांक 11 मार्च 2014

स्थान – बड़वानी

आयोजक – पहल जन सहयोग विकास संस्थान,इन्दौर

प्रायोजक – आईविड ,भोपाल

कार्यक्रम की रूपरेखा

क्र.	विषय	प्रविधि	समय	स्रोत व्यक्ति
1	पंजीयन		30 मिनट	दिशा बड़ोले
2	संस्था का परिचय एवं कार्यशाला के उद्देश्य की जानकारी	व्याख्यान	20 मिनट	प्रवीण
3	सहभागियों का परिचय	गतिविधि	30 मिनट	अनुपा
	चाय अवकाश		15 मिनट	
4	महिला दिवस का महत्व	व्याख्यान	20 मिनट	अनुपा
5	संविधान की समझ	पी.पी.टी.	40 मिनट	तुषार
6	जनप्रतिनिधि के गुण व चयन का आधार	विचारमंथन	30 मिनट	प्रवीण
	भोजन अवकाश		60 मिनट	
7	सुशासन क्या है ?	विचारमंथन	40 मिनट	अनुपा
8	समस्याओं की पहचान एवं प्रश्न तैयार करना	विचारमंथन	40 मिनट	प्रवीण
9	आभार एवं फीडबैक	अनौपचारिक	20 मिनट	हितेष
	चाय अवकाश		15 मिनट	

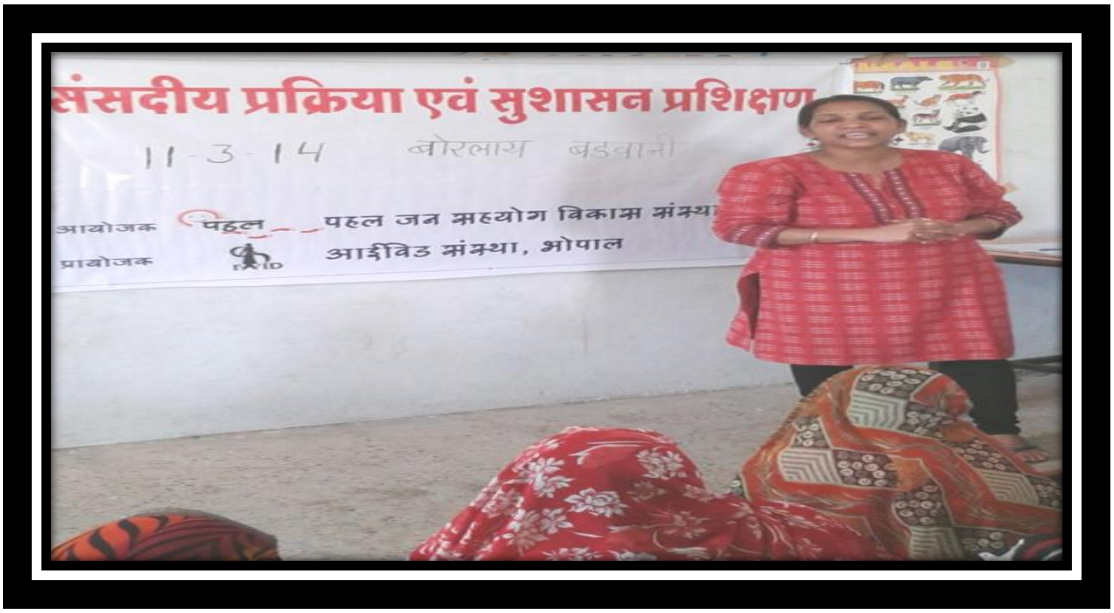

संसदीय प्रक्रिया एवं सुशासन पर प्रशिक्षण

प्रस्तावना :– सामाजिक बदलाव के क्षेत्र में कार्य करते समय जो सवाल बार–बार उठता है वह है सामाजिक समानता व न्याय का। चुंकि समाज में अमीर–गरीब,साक्षर–असाक्षर,जाति–धर्म के बीच असमानता है इसलिये अन्याय की जड़ें भी वहीं है। इस असमानता के भेदभाव को कम करने के लिये सामाजिक कदमों के साथ–साथ वैधानिक पहल की भी आवश्यकता है इसी विचार के चलते **पहल जन सहयोग विकास संस्थान** ने **आईविड** के साथ मिलकर महिलाओं की राजनेतिक समझ निर्माण व विकास हेतु बड़वानी में ''**संसदीय प्रक्रिया व सुशासन** '' के मुद्दे पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला का मुल मकसद महिलाओं को संविधान व संसदीय प्रणाली की जानकारी देते हेतु सुशासन के हेतु समाधान परक समस्या की पहचान करने के लिये प्रेरित करना था। राजनेतिक पटल पर बदलाव को समझना व दृष्टिकोण निर्माण करना जहां इस कार्यशाला का उद्देश्य था वहीं सुशासन के लिये आवश्यक कदमों की पहचान कर उस दिशा में एकजुटता बढ़ाना भी एक लक्ष्य था।

कार्यशाला का उद्देश्य – निजी जीवन में बदलाव के लाने के लिये व्यापक स्तर पर बदलाव लाना होगा और यह राजनेतिक परिवर्तन से ही संभव होगा। महिलाएं अपनी समस्याओं को अपने तरीके से प्रस्तुत करें व उसका समाधान ढुंढने में भी भागीदारी निभाएं तब जाके विकास सही मायनों में प्राप्त हो सकेगा। इस कार्यशाला के माध्यम से संसदीय प्रक्रिया एवं सुशासन से परिचय कराया गया ताकि अपने क्षेत्र के जनप्रतिनिधि के माध्यम से महिलाएं अपनी समस्याओं को शासन तक पहुंचा सकें। समाधान परक समस्या की प्रस्तुति को समझना व दृष्टिकोण निर्माण करना जहां इस कार्यशाला का उद्देश्य था वहीं महिला संसद के आयोजन के लिये योजना बनाना भी एक लक्ष्य था।

स्वागत – कार्यशाला की शुरूआत स्वागत व **गीत** से किया गया।

कार्यशाला की विषय वस्तु – इस एक दिवसीय कार्यशाला में निम्न बिंदुओं पर समझ बनाई गई

- महिला दिवस क्यों मनाते हैं ?
- संविधान क्या है
- विधान सभा की कार्य प्रणाली
- सुशासन क्रूा है ?
- स्थानीय मुद्दों की पहचान व समाधन तलाशना
- जनप्रतिनिधियों के माध्यम से प्रश्न उठाने का कौशल

प्रविधि –

- खुली चर्चा
- व्याख्यान , विचारमंथन
- गीत

सत्र 1 परिचय

समय : 30 मिनट

कार्यशाला की शुरूआत प्रतिभागियों के परिचय से किया गया। परिचय में हर एक को अपना नाम,गांव का नाम,उम्र,शिक्षा व पसंद का भोज्य पदार्थ बताना था। इसके लिये सभी को 5 मिनट का समय दिया गया। परिचय के इस सत्र में यह चर्चा की गई कि महिलाओं के लिये परिचय देना आसान नहीं था। ज्यादातर महिलाएं परिचय में पहले गांव का नाम,फिर समूह का नाम (समूह की सदस्य हैं) और अंत में अपना नाम बताती हैं। जो कि सामाजिक व्यवस्था का असर हैं कि महिलाओं को अपना नाम महत्वपूर्ण नहीं लगता। फिर परिचय देने के महत्व व तरीके पर विस्तार से चर्चा किया गया। परिचय के बाद चाय के लिये 15 मिनट का अवकाश किया गया।

सत्र 2 महिला दिवस पर चर्चा

प्रविधि : व्याख्यान **समय :** 20 मिनट **स्रोत व्यक्ति** : सुश्री अनुपा

क्या है खास 8 मार्च में

8 मार्च 1857 को अमेरिका में कपड़ा उद्योग में काम करने वाली महिलाओं ने काम के घंटे को 16 से घटाकर 10 करने के लिए विरोध प्रदर्शन किया था।

1910 में क्लारा जेटकिन के नेतृत्व में 17 देशों की महिलाओं ने इस दिन को महिला दिवस घोषित किया था।

मार्च 1915 में महिलाओं प्रथम विश्व युद्ध के विरोध में प्रदर्शन किया था।

8 मार्च 1917 में रूस की महिलाओं ने रोटी की मांग करते हुए रूसी क्रांति की नींव रखी।

8 मार्च 1974 को ईरान में 5000 महिलाओं ने पर्दाप्रथा के खिलाफ मोर्चा निकाला।

सारांश – महिलाओं को मुद्दे से जोड़ने एवं सामाजिक बदलाव में महिलाओं का क्या योगदान रहा है यह बताने के लिये महिला दिवस के इतिहास का जिक्र करते हुए चर्चा की शुरूआत हुई। चर्चा के दौरान अनुपा ने बताया कि इस पुरूष प्रधान समाज में घर बाहर दोनों जगह मशीन की तरह खटने वाली महिलाओं को अगर कुछ नहीं मिलता तो वह है आराम,मान–सम्मान और श्रम की समुचित कीमत। सदियों से औरतों ने अनेकों मोर्चे खोले अपने अधिकारों का झंडा बुलंद करने और अपने अस्तित्व को स्थापित करने के लिए। 8 मार्च यानि अंर्तराष्ट्रीय महिला दिवस भी ऐसा ही दिन है जो महिला अधिकारों के लिए किये गए संघर्ष की याद दिलाता है। एक नहीं कई आंदोलन छिड़े थे इस दिन और आखिरकार दर्ज हो गया यह दिन इतिहास में औरतों के संघर्ष और विजय के नाम पर। हम समय–समय पर स्त्री अधिकारों की बात करते रहते हैं पर 8 मार्च इन सबमें खास अवसर होता है।

क्योंकि इस दिन पूरी दुनिया में एक साथ औरतों के वर्चस्व को मान–सम्मान,पहचान व मूल्य दिलाने का नारा बुलंद होता है। इसी के साथ 10 मार्च महिला शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव लाने वाली सावित्री बाई फूले के निधन का दिन है जिसे राष्ट्रीय महिला दिवस के तौर पर मनाते हैं। आज सबसे अधिक आवश्यकता महिलाओं के लिये हर तरह की जानकारी से लैस होने की है। महिलाओं की भागीदारी हर क्षेत्र में बढ़ रही है परंतु राजनेतिक सशक्तता की दिशा में हम बेहद धीमी गति से बढ़ रहे हैं। इसी दिशा में आगे समझ बढ़ाने के लिये इस कार्यशाला का आयोजन किया गया।

सत्र – संविधान की समझ

प्रविधि : व्याख्यान **समय :** 40 मिनट **स्रोत व्यक्ति** : श्री तुषार

सारांश – चर्चा इस बात से आरंभ हुई कि हमारा घर कैसे चलता है ? किसी न किसी नियम के अधीन । नियम कैसे बने,समाज के नीति नियमों के प्रभाव से। जैसे हमारे घर में मुखिया घर चलाते हैं वही नियम बनाते हैं वैसा देश में नहीं होता। देश में एक व्यक्ति नियम नहीं बनाता बल्कि बहुत सारे लोगों के द्वारा नियम बनाये गये है और इसे एक किताब में लिखा गया ताकि सभी जगह एक जैसा शासन चल सके। वह किताब जिसमें देश को चलाने वाले नीति नियम लिखा गया है उसे हम संविधान कहते हैं। प्रत्येक स्वाधीन राष्ट्र का अपना पृथक संविधान होता है और इसी संविधान के अनुसार उस राष्ट्र की शासन व्यवस्था परिसंचालित होती है। प्रत्येक राष्ट्र का विकास तभी संभव है जब उस राष्ट्र का संविधान उसकी जनता द्वारा स्वयं या जनता द्वारा चुनी गई संविधान निर्मात्री सभा द्वारा निर्मित हो।

संविधान सभा के प्रमुख सदस्य

चर्चा में बताया कि संविधान सभा में कुल सदस्यों की संख्या 389 भी जिसमें पण्डित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, के.एममुन्शी, गोपालास्वामी आयंगर, अल्लादि कृष्णास्वामी अय्यर, पट्टाभि सीतारमैया, श्रीमती दुर्गाबाई, ठाकुरदास भार्गव,मौलाना अबुल कलाम आजाद का योगदान महत्वपूर्ण रहा। कुल मिलाकर ज्यादातर पुरूषों की भागीदारी व प्रभाव। हम संविधान को फिर नहीं बना सकते पर इसके अधीन सरकार चलाने वालों को तो मिलकर सुशासन के लिये प्रेरित कर सकते हैं।

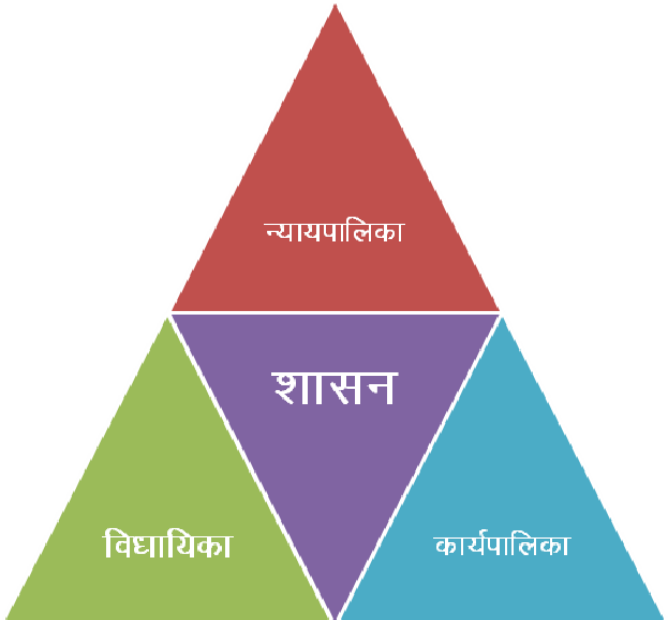

सरकार के तीन अंग होते हैं:– **विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका।**

संविधान की विशेषता –

विधायिका यानि जहां पर विधान बनता है। देश के विकास के लिये नीति नियम ,कानून व योजनाएं इसी हिस्से में बनाएं जाते हैं। इसके कार्यान्वयन की जिम्मेदारी कार्यपालिका पर होती है जिसे नौकरशाही भी कहते हैं। इसके व्यवस्था में किसी प्रकार की गड़बड़ी या कमी की दशा में न्यायपालिका की भूमिका शुरू होती है। इसे समझााने के लिये उदाहरण दिया गया कि गरीबी में जीवनयापन करने वालों को भूखमरी से बचाने के लिये विधायिका ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली बनाया जिससे गरीबों को कम से कम खर्च में राशन मिल सके। कार्यपालिका इसके वितरण के लिये खाद्य विभाग को जिम्मेदारी दी ।

विभाग ने गांव–गांव में राशन दुकान खोलकर राशन वितरण की व्यवस्था की जिससे सभी गरीबों को उचित मूल्य पर राशन मिलने लगा। अब ऐसे में बारिश के दौरान गोदामों में रखा राशन सड़ गया जिससे जनता को या तो राशन नहीं मिला या खराब राशन मिला। तब फिर सुप्रीम कोर्ट में लगी याचिका के आधार पर कोर्ट ने सरकार को अनाज के भण्डारण व रखरखाव की समुचित व्यवस्था करने का आदेश दिया। इस तरह से तीनों के कार्य एक दूसरे से जुड़े हुए है।

सत्र 3 – सहभागियों का परिचय एवं जनप्रतिनिधि के गुणों की परख

प्रविधि – कार्ड पर लिखकर एवं विचारमंथन के आधार पर चर्चा

प्रविधि : व्याख्यान

समय : 30 मिनट

स्रोत व्यक्ति : श्री प्रवीण

इस सत्र में सहभागियों को पूछा गया कि वे अपने क्षेत्र के विधायक के बारे में सोचें। फिर उनका नाम,उसका गुण बताएं। सत्र में चर्चा के बाद पता चला कि ज्यादातर महिलाओं को अपने क्षेत्र के विधायक का नाम ही नहीं पता। तब चर्चा हुई कि हम वोट डालते हैं पर किसे ,ये हम नहीं जानते। हमने जिसे वोट दिया वही जीता या कोई और यह हम पता करना आवश्यक नहीं समझते मगर अपनी समस्याओं की बात जरूर उठाते हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि जिससे समस्या बताना चाहते हैं उसका नाम हमें नहीं पता। एक महिला कहने लगी यह तो वैसे ही है जैसे भगवान की मुर्ति के सामने खड़े होकर दुख बताते हैं पर वो दिखते नहीं और ना ही हमारे पास कभी आते हैं और समस्या हल करेंगे इसकी भी गारंटी नहीं होती। तो क्या जनप्रतिनिधि भी भगवान हो गये ? पर जनप्रतिनिधि तो जनता के द्वारा चुने गये प्रतिनिधि है ताकि शासन बेहतर चल सके। तो जनप्रतिनिधि अच्छे होंगे तभी तो शासन अच्छा होगा। **अच्छे जनप्रतिनिधि कैसे होने चाहिये** पर चर्चा हुई तो महिलाओं ने बताया जो हमारी बात सुने,काम करवाए,मदद करे,मेलजोल वाला हो और ईमानदार हो आदि।

भोजन अवकाश – इसके पश्चात एक घंटा भोजन अवकाश किया गया जिसमें सभी सहभागियों ने एक साथ बैठकर भोजन ग्रहण किया। खाने के साथ–साथ अपने–अपने जनप्रतिनिधि के बारे में बातें भी चल रही थी ।

भोजन के बाद **बोल मेरी बहना बोल जरा** " गीत के साथ सत्र की पुनः शुरूआत की गई।

सत्र : सुशासन क्या है ?

प्रविधि – विचारमंथन के आधार पर चर्चा **समय :** 40 मिनट **स्रोत व्यक्ति** : सुश्री अनुपा

सत्र सारांश – सत्र में चर्चा हुई कि हमारे जनप्रतिनिधि में ये सारे गुण है तो उनके द्वारा आप कैसे शासन की अपेक्षा करेंगे यानि कि **सुशासन** किसे कहेंगे ? एक महिला ने कहा रावणराज का उल्टा होगा सुशासन यानि किसी की मनमानी नहीं चलेगी बल्कि सबका बराबर हक होगा।

यानि कि **सुशासन** होगा यदि –

- ✓ **सबको न्याय मिले**
- ✓ **गरीबी खत्म हो**
- ✓ **सबके पास काम हो**
- ✓ **शिक्षा मिले**
- ✓ **स्वास्थ्य सुविधा हो**
- ✓ **जल,जंगल व ज़मीन हमारे पास हो**
- ✓ **हिंसा से मुक्त**

सत्र : समस्या की पहचान करना

प्रविधि – विचारमंथन के आधार पर चर्चा **समय :** 40 मिनट **स्रोत व्यक्ति** : श्री प्रवीण

सत्र सारांश – इस सत्र में जनप्रतिनिधियों से पूछे जाने वाले प्रश्नों को कैसे तैयार करें इस पर चर्चा हुई। मुद्दे की पहचान करना,उसका विश्लेषण करना फिर उसके समाधान के साथ उसे प्रस्तुत करना एक कौशल है जिसके माध्यम से हम अपने प्रश्नों की सुग्राह्यता बढ़ा सकते हैं। सभी सहभागियों कहा गया कि अपने–अपने क्षेत्र की सबसे गंभीर समस्या बताएं। सहभागियों की चर्चा से निकले मुद्दे इस प्रकार हैं –

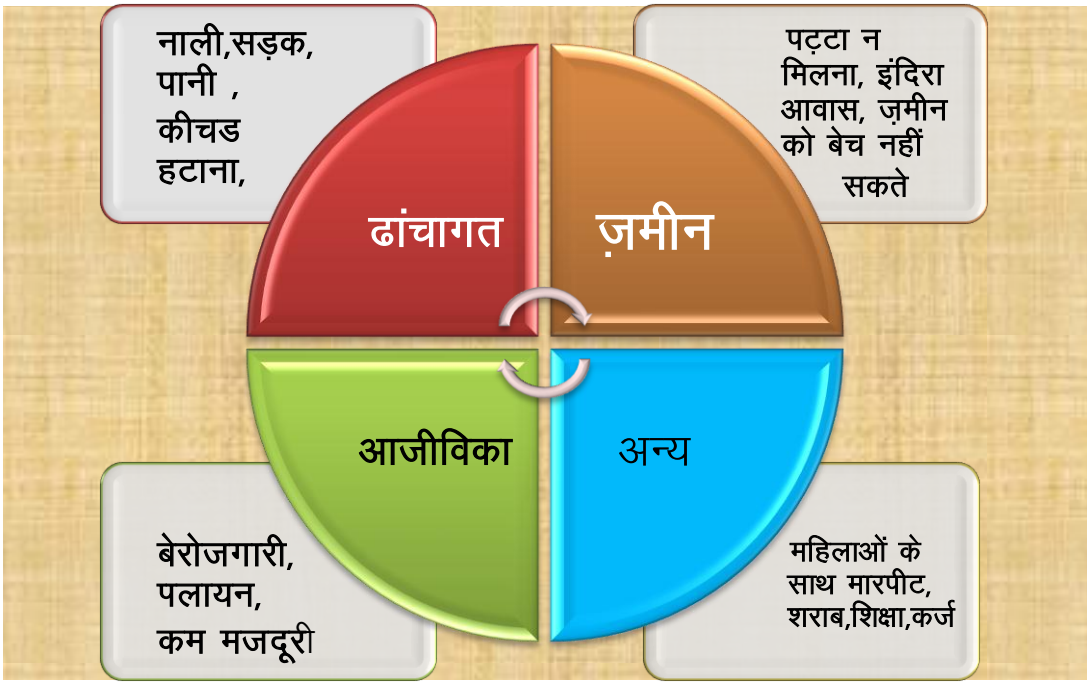

दाल नहीं गलती

कहीं स्कूल नहीं है तो कहीं स्कूल दूर है और शिक्षक भी नहीं आते,अच्छी पढ़ाई नहीं होती ये उन मांओं की समस्या थी जिनके बच्चे अभी स्कूल में हैं। सुनिता बाई का कहना था कि हमें कोई कर्ज नहीं देता क्योंकि हमारे पास बदले में देने के लिये कुछ नहीं है।

कहीं शराब से घर उजड़ रहा है तो कहीं लड़ाई के चलते घर में रहना मुश्किल हो गया तो किसी के पास रहने के लिये घर ही नहीं है। सबसे खास बात यह थी कि एक महिला ने कहा हमारे यहां पानी की दिक्कत है तो दूसरी महिला कहने लगी पानी की दिक्कत तो अब कम हो गई हां मगर **दाल नहीं गलती**। पीछे से आवाज़ आई किसकी ? और सब खिलखिलाकर हंस पड़े। रूक्मणी यादव कहने लगी नेताओं की दाल तो गल रही है हमारे घर की नहीं गलती। देखो पानी तो ठीक ठाक मिल रहा है पर जो पानी घरों में उपयोग के लिये मिल रहा है वह दाल पकाने के लिये उपयुक्त नहीं है। मैंने खेतों में सिंचाई के लिये मिलने वाले से दाल पकाया तो वह अच्छे से गल गया। मैं चाहती हूं कि सरकार जो पानी सिंचाई के लिये देती है वही हमें घरों में उपयोग के लिये भी दे तो इस समस्या से मुक्ति मिल जाएगी।

समापन सत्र : संसदीय प्रणाली व सुशासन पर समझ बनाने हेतु आयोजित इस कार्यशाला में सहभागियों की सक्रिय भागीदारी से बेहद महत्वपूर्ण मुद्दे निकल कर आए। महिलाओं ने अपने क्षेत्र की समस्याओं खुलकर रखा और उस पर चर्चा भी की। अंत में सभी से फीडबैक लिया गया कि उन्हें यह कार्यशाला में क्या सीखने को मिला। सहभागियों ने बताया कि देश कैसे चलता है ,नेता कैसे काम करते हैं और हमें समस्या समाधान के साथ रखनी चाहिये,अपने नेता से मिलना चाहिये ताकि हमारी बाते उन तक पहुंचाई जा सके आदि बातें जानने को मिला जो कि रूचिकर होने के साथ उपयोगी भी था। ये भी वादा किया कि हम अन्य महिलाओं से भी इस विषय पर बात करेंगे और अपने जनप्रतिनिधि को भी कहेंगे कि इस बार वोट तभी देंगे जब हमारे मुद्दों को प्राथमिकता मिले। सबसे अंत में पहल संस्था से हितेष पांडे ने सभी सहभागियों का आभार प्रदर्शन किया।

चाय और पकोड़ों के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

कार्यशाला में किये गये व्यय का विरण –

Particulars	Unit cost	Unit of Measurement	Qty	No. of days/ months/unit	Amount
Travel for participants	50	Per person per trip	68	1	3,400
Resource persons travel	200	Per person per trip	2	1	400
Honararium for Resource persons	1,000	per person per day	2	1	2,000
Food and Refreshment	100	Per day/participant	70	1	7,000
Venue hiring, stationery & other logistics	1,500	Per meeting/day	1	1	1,500
Total					14,300

चुंकि 3400 रूपये पहल के द्वारा भुगतान किया गया है अतः कुल 10900 रूपये ही आईविड के द्वारा भुगतान किया जाना है ।

badwani patrika . बुधवार. 12 मार्च 2014

कार्यशाला

कार्यशाला का हुआ आयोजन, 90 महिलाओं ने लिया हिस्सा

महिलाओं ने जानीं संसदीय प्रक्रिया और सुशासन

कार्यक्रम

कार्यक्रम में उपस्थित महिलाएं।

पत्रिका फोटो

बोरलाय के सामुदायिक भवन में पहल जन सहयोग विकास संस्थान द्वारा मंगलवार को एक दिवसीय कार्यशाला हुई। कार्यशाला में अंजड़, गायबेड़ा, सोसाड़, अंजड़, लोनसरा फाटा बोरलाय, भीलट फल्या की 90 महिलाओं को संसदीय प्रणाली व सुशासन के बारे में जानकारी दी।

बड़वानी

badwani@patrika.com

कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को संविधान व सुशासन से परिचित कराना था। ताकि वे अपने क्षेत्र के विकास के मुद्दों को संवैधानिक तौर पर उठा सकें।

अनुपा ने महिलाओं को महिला दिवस के इतिहास की जानकारी देते हुए बताया कि 1910 से महिला दिवस मनाने की शुरूआत की, ताकि महिलाओं के प्रयासों को भी पहचान व महत्व मिल सकें।

49 प्रति. महिला मतदाता

49 प्रतिशत महिलाएं मतदाता हैं। इसके बावजूद अपने प्रत्याशी, चुनाव क्षेत्र या उनके कार्यों के बारे में ज्यादा बात नहीं करती। क्योंकि वे स्वयं या समाज उन्हें महत्व नहीं देता। वर्तमान में भारतीय संसद में केवल 90 महिला सांसद हैं और वे भी महिलाओं की समस्याओं को ठीक तरीके से संसद में नहीं उठा पातीं। आज जरूरत है महिलाओं को बड़ी संख्या में भागीदारी करने की।

सबसे पहले अपनी समस्या पहचानें

संस्था सचिव प्रवीण गोखले ने कहा कि सबसे पहले अपनी समस्याओं को पहचानें और फिर उन्हें तथ्यों व आंकड़ों के साथ प्रस्तुत करें। इसके बाद अपनी समस्या जनप्रतिनिधि तक पहुंचाते समय केवल समस्या की बात न करें। बल्कि उसका समाधान भी सुझाएं। क्योंकि एक तो हमारे जनप्रतिनिधियों को अपने क्षेत्र की समस्या ठीक से पता नहीं होती ,उस पर समाधान नहीं पता होने के कारण आगे उसका कोई हल नहीं कर पाते जिससे जनता में असतोस रहता है। आप समाधानपरक समस्या रखेंगे तो जनप्रतिनिधि आपकी बात सुनने को मजबूर हो जाएंगे। कार्यशाला में संस्था के सुरेश यादव, मुन्नी जाधव, दिशा बड़ोले सहित बड़ी संख्या में महिलाएं मौजूद थी। आभार हितेश पांडे ने माना।

दैनिक जागरण , 13 मार्च 2014

महिलाओं ने जाना संसदीय प्रक्रिया एवं सुशासन

बड़वानी। मंगलवार को बोरलाय के सामुदायिक भवन में विकास संस्थान द्वारा संसदीय प्रणाली एवं सुशासन को लेकर एक कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें कई महिलाओं ने भाग लिया। इस एक दिवसीय कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को संविधान एवं सुशासन से परिचित कराना था। कार्यक्रम के दौरान सुश्री अनुपा ने सभी महिलाओं को महिला दिवस की शुभकामनाएं दी और महिला दिवस के शुरूआत होने के इतिहास पर प्रकाश डाला।

12 मार्च, 2014

दैनिक भास्कर

पांच साल बीते, नहीं मिला किसी भी योजना का लाभ

संसदीय प्रक्रिया एवं सुशासन प्रशिक्षण में महिलाओं ने बताई पीड़ा, जनप्रतिनिधियों के चयन की जानकारी दी

मास्टर ट्रेनर अनुपा के समक्ष अपनी समस्या बताती सुनिता बाई।

भास्कर संवाददाता | बड़वानी

पांच साल बीत गए। विधानसभा के बाद अब लोकसभा चुनाव भी आ गया। देश व प्रदेश को हमने जनप्रतिनिधि दिए। बदले में हमें किसी भी शासकीय योजना का लाभ नहीं मिला। सुनीताबाई के इतना कहते ही प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित अन्य महिलाओं ने उनके सूर में सूर मिलाना शुरू कर दिया। कुछ महिलाओं ने कहा राज्य व केंद्र सरकार से जारी राशि का एक छोटा सा हिस्सा हम लोगों तक पहुंच रहा है। बांकी तो बड़े नेता व अफसर हजम कर जाते हैं।

समीपस्थ बोरलाय में पहल जनसहयोग विकास संस्थान ने मंगलवार सुबह 11 से शाम 4.30 बजे तक को सामुदायिक भवन में संसदीय प्रक्रिया एवं सुशासन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम रखा। इसमें महिलाओं ने खुलकर अपनी समस्याएं रखी। मुलभूत सुविधाओं की कमी के साथ ही उन्होंने जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों द्वारा गरीबों की अनदेखी पर रोष जताया। उन्होंने कहा नेता व अधिकारी गरीबों के विश्वास पर खरे उतरने वाले होना चाहिए। हमने तो भरोसा कर वोट दे दिया। बाद में हमें कुछ नहीं मिला। राजनैतिक पार्टी को लेकर उन्होंने कहा सभी नेता एक जैसे ही है। पद व प्रतिष्ठा पाने के बाद उन्हें हमारी (मतदाताओं) याद पांच साल बाद यानि चुनाव के समय ही आती है। मास्टर ट्रेनर अनुपा ने जनप्रतिनिधियों के भरोसेमंद होने, मतदान के समय सावधानी बरतने की जानकारी दी। प्रशिक्षक तुषार गणवीर ने महिलाओं को संविधान, न्याय व कार्यपालिका संबंधी जानकारी दी। इस दौरान हितेश पांडे, मुन्नी जाधव, दिशा भंडोले एवं बोरलाय व अंजड़ की 80 महिलाएं उपस्थित थी। संस्था सचिव प्रवीण गोखले ने बताया भविष्य में मप्र की 50 से 100 महिलाओं का दल बनाया जाएगा। दल को विधानसभा एवं संसद का भ्रमण कराया जाएगा। इसके जरिए वे प्रश्न काल, शून्य काल एवं दोनों सदनों की कार्यप्रणाली को नजदीक से देख व समझ सकेंगी।

सहभागियों की सूची

दिनांक – 11/03/14

संसदिय प्रक्रिया एंव सुशासन प्रशिक्षण

NOTES

क्र.	नाम	पता	हस्ताक्षर
1.	जया सोनु पटेल	सोसाट मोहल्ला नवलपुरा, अंजड	जया
2.	कविता विश्राम	गाय बैडा अंजड	कविता
3.	माया महेंद्र ठाकुर	गाय बैडा, अंजड	माया
4.	कुसुम कामानिया	गाय बैडा, अंजड	कुसुम
5	निरमा कुंदिया	गाय बैडा, अंजड	निरमा
6.	शंकुतला महेश	गाय बैडा, अंजड	शंकुतला
7.	जानकी राजु	गाय बैडा, अंजड	जानकी
8.	सावित्रीबाई राजाराम यादव	भिलट मोहल्ला, बोरलाय	सावित्री बाई
9	शिवकन्या उमेश यादव	भिलट मोहल्ला, बोरलाय	शिवकन्या

सहभागियों की सूची

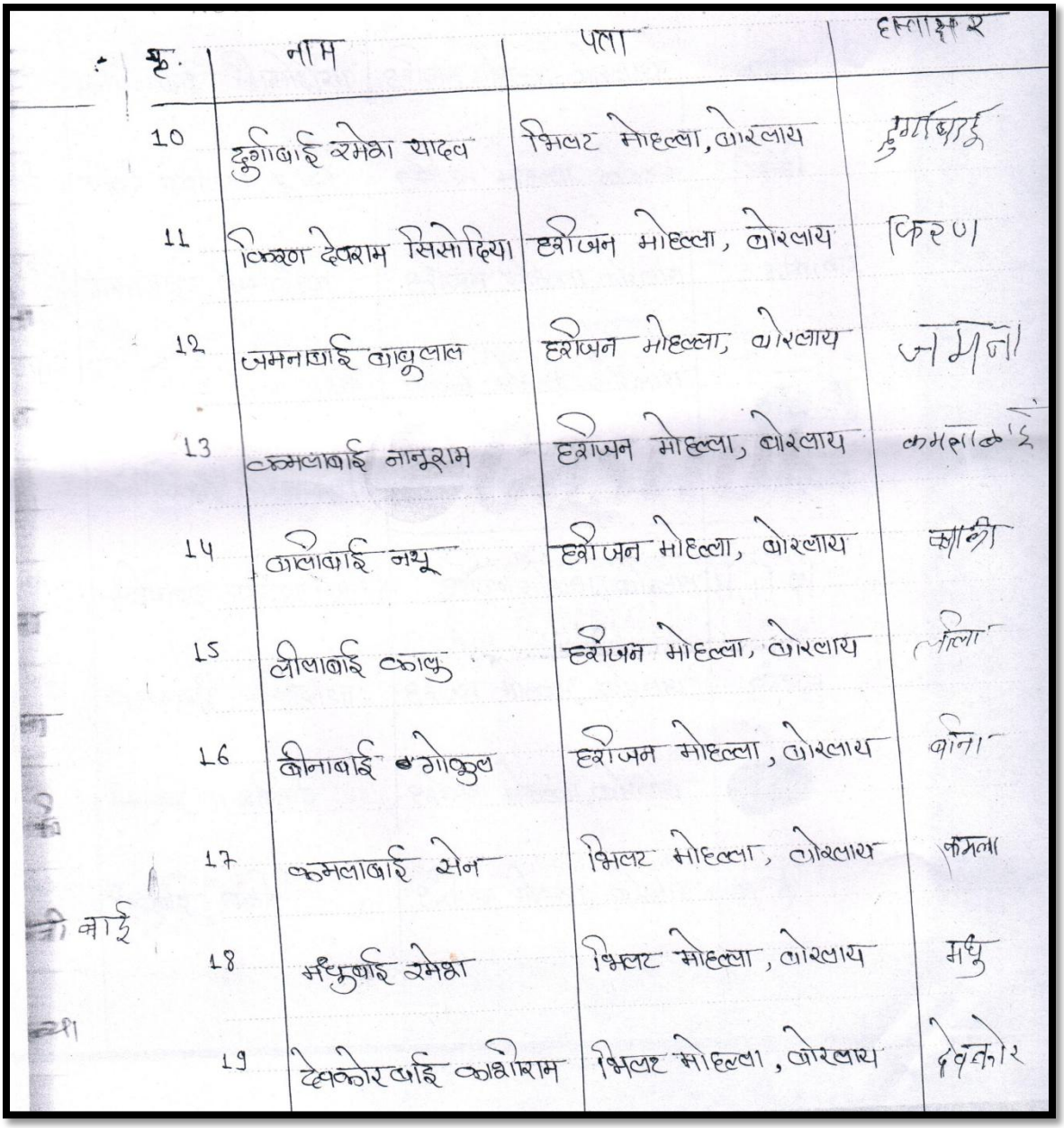

क्र.	नाम	पता	हस्ताक्षर
10	दुर्गाबाई रमेश यादव	भिलट मोहल्ला, बोरलाय	दुर्गाबाई
11	किशन देवराम सिसोदिया	हरीजन मोहल्ला, बोरलाय	किशन
12	जमनाबाई बाबुलाल	हरीजन मोहल्ला, बोरलाय	जमना
13	कमलाबाई नानूराम	हरीजन मोहल्ला, बोरलाय	कमलाबाई
14	बालीबाई नथू	हरीजन मोहल्ला, बोरलाय	बाली
15	लीलाबाई कालु	हरीजन मोहल्ला, बोरलाय	लीला
16	बीनाबाई गोकुल	हरीजन मोहल्ला, बोरलाय	बीना
17	कमलाबाई सेन	भिलट मोहल्ला, बोरलाय	कमला
18	मधुबाई रमेश	भिलट मोहल्ला, बोरलाय	मधु
19	देवकोरबाई काशीराम	भिलट मोहल्ला, बोरलाय	देवकोर

सहभागियों की सूची

सहभागियों की सूची

क्र.	नाम	पता	हस्ताक्षर
20.	उमाबाई कमल यादव	भिलट मोहल्ला, बोरलाय	उमा
21	नमिताबाई सिसोदिया	हरीजन मोहल्ला, बोरलाय	नमिता
22.	पिंकी देवीलाल यादव	हरीजन मोहल्ला, बोरलाय	पिंकी
23.	मायाबाई सिसोदिया	हरीजन मोहल्ला, बोरलाय	माया बाई
24.	शिवलीबाई सिसोदिया	हरीजन मोहल्ला, बोरलाय	
25.	संतोषीबाई सिसोदिया	हरीजन मोहल्ला, बोरलाय	सन्तोषी
26.	संतोषीबाई जगदीश सिसोदिया	हरीजन मोहल्ला, बोरलाय	संतोषी
27.	कंचनबाई सिसोदिया	हरीजन मोहल्ला, बोरलाय	कंचन
28	धन्नूबाई बच्चीबाई	हरीजन मोहल्ला, बोरलाय	
29.	धन्नूबाई भंगोले	हरीजन मोहल्ला, बोरलाय	[illegible]

सहभागियों की सूची

क्र.	नाम	पता	हस्ताक्षर
30.	सपना खंडोले	हरिजन मोहल्ला, बोरलाय	सपना
31	कमलाबाई बारेला	नवलपुरा, अंजड	
32.	पुनमबाई बारेला	नवलपुरा, अंजड	
33.	सेमबाई बारेला	नवलपुरा, अंजड	
34.	सुनीताबाई कोली	तलाब मोहल्ला, बोरलाय	
35.	तुलसीबाई वर्मा	लोणसरा फाटा, बोरलाय	तुलसीबाई
36.	मनोरमा कोदे	लोणसरा फाटा, बोरलाय	मनोरमा को
37	सुमाबाई वडकुडे	लोणसरा फाटा, बोरलाय	
38.	धोनुबाई सिकलीकर	नवलपुरा, अंजड	
39.	बोनकोर सिकलीकर	— " —	

सहभागियों की सूची

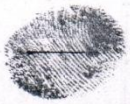

क्र०	नाम	पता	हस्ताक्षर
40.	ललिताबाई चौहान	लोनसरा फाटा बोरलाय	
41.	सुमाबाई कोली	—"—	
42.	लक्ष्मीबाई कोली	—"—	
43.	पुष्पाबाई कोली	—"—	मंजु
44.	मंजुबाई कोली	—"—	पुष्पा
45.	कंचन कोली	—"—	कंचन
46.	पुष्पाबाई पवन	नवलपुरा, अंजड	पुष्पा
47.	नीरु अमरसिंग	नवलपुरा अंजड	नीरु
48.	सोनुबाई कोली	लोनसरा फाटा, बोरलाय	सोनू
49.	देवकीबाई बड्डी	तलाब मोहल्ला बोरलाय	देवकी
50.	सुशिलाबाई योगी	तलाब मोहल्ला बोरलाय	सुशिला

सहभागियों की सूची

क्र०	नाम	पता	हस्ताक्षर
51.	रुक्मनी यादव	तालाब मोहल्ला, बोरलाय	रुक्मनी यादव
52.	नसीब अमजद	हैदर फल्या, बोरलाय	नसीम
53.	सायराबाई आबिद	हैदर फल्या, बोरलाय	सायरा
54.	रानीबाई हनीफ	हैदर फल्या, बोरलाय	रानी
55.	गिरजा कैलास यादव	हैदर फल्या, बोरलाय	गिरजा
56.	संतोषी नरेन्द्र कुशवाह	लोबसरा फाटा, बोरलाय	संतोषी
57.	सुनिताबाई कोली	—॥—	सुनिता
58.	संतोषीबाई भुआल्दा	—॥—	संतोषी
59.	शिवकोरबाई शांतीलाल	—॥—	शिवकोर
60.	उमाबाई चौहान	भिलर मोहल्ला, बोरलाय	उमा

सहभागियों की सूची

क्र०	नाम	पता	हस्ताक्षर
61	मुन्नी जाधव	सिलावद	[illegible]
62	सुरेश यादव	वारला	[illegible]
63	रीना पटेल	अंजड़	R.Patel
64	जशोदा बामनिया	अंजड़	Bamniya
65	दिशा बड़ोले	बड़वानी	Disha
66	हितेश पांडे	बड़वानी	[illegible]
67	लक्ष्मी दिनकर	वसाहट बोरलाय (साई मंदिर)	[illegible]
68	TUSHAR GANVER	INDORE	[illegible]
69	प्रवीण गोखले	पहल, इंदौर	Pokhale
70	अनुपा	"	[illegible]
71			